Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 06, (नवंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 01–02

महिला किसान और जलवायु परिवर्तनः चुनौतियां और उनकी ताकत

डॉ नीना व्यास एवं अक्षिता अवस्थी

चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्व विद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत।

Email Id: – akshitaawasthi876@gmail.com

परिचय

हिमालय की तलहटी में, एक छोटा सा गांव सुबह 4 बजे उठता है। जबकि गांव के अधिकांश लोग अभी भी सो रहे हैं, गीता देवी पहले से ही अपने आंगन में हैं, चूल्हा जला रही हैं और चाय तैयार कर रही हैं। उनके पति शहर में एक मजदूर के रूप में काम करते हैं, और गीता को अपने बच्चों की शिक्षा और परिवार की आजीविका के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार छोड़ दिया है। बुवाई और सिंचाई से लेकर कटाई तक, वह खेती के हर काम को अकेले ही संभालती हैं। गीता की कहानी पूरे भारत में लाखों महिला किसानों की कहानी को दर्शाती है, जिनकी रोजमर्रा की जिंदगी जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरों के बीच कृषि को बनाए रखने के संघर्षों से आकार लेती है।

जलवायु परिवर्तन का दोहरा बोझ

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट है, लेकिन इसका परिणाम महिला किसानों पर सबसे अधिक पड़ता है। अनियमित वर्षा, लंबे समय तक सूखा, अप्रत्याशित ओलावृष्टि और कीटों के संक्रमण ने कृषि को और अधिक अनिश्चित बना दिया है। महिलाएं, जो भारत की कृषि श्रम शक्ति का लगभग 70: हिस्सा हैं, बिना मान्यता या समर्थन के इस अनिश्चितता का सामना करती हैं। उनके भारी योगदान के बावजूद, ज्यादातर महिलाओं के पास कानूनी रूप से जमीन नहीं है। भूमि के मालिकाना हक की कमी उन्हें सरकारी योजनाओं, फसल बीमा और कृषि ऋण सुविधाओं से बाहर कर देती है। जब जलवायु संबंधी आपदाओं के कारण फसलें खराब हो जाती हैं, तो महिलाएं सबसे पहले सीमित पानी के साथ खेतों की सिंचाई के लिए संघर्ष करने, गहन श्रम के माध्यम से कीटों के हमलों का सामना करने और फसलों की रक्षा के लिए रात भर जागने के प्रभाव को महसूस करती हैं। फिर भी, निर्णय लेने में उनकी भूमिका न्यूनतम बनी हुई है। लैंगिक असमानता और जलवायु भेद्यता का यह प्रतिच्छेदन उनके दोहरे बोझ की जड़ बनाता है।

बढ़ती श्रम और पानी की कमी

पारंपरिक जल स्रोतों की कमी ने महिलाओं के श्रम को तेज कर दिया है। कई क्षेत्रों में, वर्षा के बदलते पैटर्न के कारण कुएं सूख गए हैं या खारे हो गए हैं। गीता जैसी महिलाओं को अब घरेलू उपयोग, पशुधन और फसलों के लिए पानी लाने के लिए ऊबड़–खाबड़ इलाकों में कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। यह दैनिक संघर्ष घंटों शारीरिक प्रयास का उपभोग करता है, जिससे आराम, आय सृजन या चाइल्डकैअर के लिए बहुत कम समय बचता है। पानी की कमी स्वच्छता को भी प्रभावित करती है, जिससे महिलाओं और उनके परिवारों के लिए स्वास्थ्य जोखिम बढ़ जाता है।

स्वास्थ्य चिंताएं

जलवायु परिवर्तन ने अप्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वास्थ्य की स्थिति को खराब कर दिया है। कीटों की आबादी में वृद्धि के कारण कीटनाशकों के उपयोग में वृद्धि हुई है, और यह मुख्य रूप से महिलाएं हैं जो उचित सुरक्षात्मक गियर के बिना छिड़काव करती हैं। लगातार संपर्क में रहने से त्वचा की एलर्जी,

श्वसन संबंधी बीमारियां, आंखों में जलन और यहां तक कि प्रजनन स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी होती हैं। दुर्भाग्य से, ऐसी बीमारियों को अक्सर व्यावसायिक दिनचर्या के हिस्से के रूप में नजरअंदाज या सामान्यीकृत किया जाता है, जिससे महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को और शांत किया जाता है।

समाधान के हिस्से के रूप में महिलाएं

सीमित संसाधनों और मान्यता के बावजूद, महिला किसान लचीलेपन और अनुकूलन के शक्तिशाली एजेंट के रूप में उभरी हैं। पूरे भारत में, महिला समूह पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान को पुनर्जीवित कर रहे हैं, तालाबों के माध्यम से वर्षा जल का संरक्षण कर रहे हैं, फसल चक्र का अभ्यास कर रहे हैं, खाद बना रहे हैं और घरेलू पोषण सुनिश्चित करने वाले किचन गार्डन विकसित कर रहे हैं। स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और समुदाय–आधारित संगठनों के माध्यम से, महिलाएं टिकाऊ कृषि पद्धतियों को सीख रही हैं, जलवायु–लचीले बीजों का चयन कर रही हैं, जैविक आदानों को अपना रही हैं और मिश्रित फसल प्रणालियों के साथ प्रयोग कर रही हैं। राजस्थान के बाड़मेर में, महिलाओं ने सामूहिक रूप से प्राचीन तालाबों का जीर्णोद्धार किया, जिन्होंने स्थानीय जल आपूर्ति को पुनर्जीवित किया। ओडिशा में, महिला किसानों के समूहों ने जैविक खेती को अपनाया, इनपुट लागत को कम किया और बेहतर बाजार मूल्य हासिल किए। इस तरह की पहल दर्शाती है कि सूचना, सामूहिक शक्ति और स्थानीय संसाधनों से सशक्त होने पर, महिला किसान जलवायु अनुकूलन प्रयासों का प्रभावी ढंग से नेतृत्व कर सकती हैं।

प्रणालीगत परिवर्तन की आवश्यकता

जलवायु परिवर्तन के लैंगिक प्रभाव को सही मायने में संबोधित करने के लिए, प्रणालीगत और नीति–स्तरीय सुधार आवश्यक हैं।

भूमि अधिकारः ऋण, सब्सिडी और आपदा राहत तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिये भूमि का स्वामित्व कानूनी रूप से महिलाओं तक बढ़ाया जाना चाहिए।

क्षमता निर्माण और प्रौद्योगिकी पहुंचः जलवायु–लचीली कृषि, प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली और डिजिटल उपकरणों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम सीधे महिला किसानों तक पहुंचने चाहिए।

वित्तीय समावेशनः समर्पित क्रेडिट लाइनें, कम ब्याज वाले ऋण और बीमा उत्पाद महिलाओं के लिए तैयार किए जाने चाहिए।

बाजार संबंधः महिला सहकारी समितियों को मजबूत करना और उन्हें स्थानीय और राष्ट्रीय बाजारों से जोड़ना उनकी आय स्थिरता को बढ़ा सकता है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य

विश्व स्तर पर, महिलाएं खाद्य सुरक्षा और टिकाऊ कृषि प्रणालियों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में, भूमि अधिकारों, प्रौद्योगिकी तक पहुंच और माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने से उच्च उत्पादकता, बेहतर पोषण और मजबूत सामुदायिक लचीलापन हुआ है। एफएओ, संयुक्त राष्ट्र महिला और आईएफएडी जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां इस बात पर जोर देती हैं कि जलवायु अनुकूलन और संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए लिंग–समावेशी दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हैं।

समाप्ति

जलवायु परिवर्तन एक निर्विवाद चुनौती है, लेकिन इसने गीता जैसी महिलाओं की असाधारण शक्ति और नेतृत्व को भी उजागर किया है। वे केवल एक गर्म होते ग्रह के शिकार नहीं हैं, बल्कि नवप्रवर्तक, निर्णय लेने वाले और भूमि के संरक्षक हैं। नीति, शिक्षा और वित्तीय सशक्तिकरण के माध्यम से कृषि में महिलाओं को समान भागीदार के रूप में मान्यता देना न केवल न्याय का विषय है, बल्कि टिकाऊ, जलवायु–लचीले ग्रामीण समुदायों के निर्माण के लिए भी एक शर्त है। सच्चे जलवायु न्याय का मार्ग तब शुरू होता है जब महिला किसानों को कृषि की रीढ़ के रूप में और परिवर्तन के नेताओं के रूप में देखा जाता है, सुना और समर्थित किया जाता है।